शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३८ : नई दिल्ली : २३-२९ दिसम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी बाड़मेर संभाग में विचरण कर रहे हैं। पूज्यप्रवर की यात्रा अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में गतिमान है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आचार्यप्रवर २७ दिसम्बर को बाडमेर पधार जाएंगे। यहां छह दिन विराजेंगे। प्राप्त सूचना के अनुसार नववर्ष की पूर्व संन्ध्या पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के बाडमेर पहुंचने की संभावना है।

जिज्ञासा आपकी : समाधान पूज्यप्रवर का-३

प्रश्न :- अहंकार व महत्त्वाकांक्षा का परस्पर क्या संबंध है? क्या ये दोनों पीड़ादायक हैं या सुखकारक? क्या लक्ष्य प्राप्ति के लिए इनका होना जरूरी है? धार्मिक कार्यों में व्यस्त रहना, संघ सेवा में समय देना और उनसे व उनके कारण मिलने वाला आदर सम्मान क्या अहंकार की भाषा या परिभाषा में आता है?

उत्तर : अहंकार तो त्याज्य है और महत्त्वाकांक्षा जो भौतिक चीजों की है, उसमें भी परिसीमन का प्रयास होना चाहिए। जो महत्त्वाकांक्षी हैं, उन्हें यह चिंतन करना चाहिए कि हमारा जीवन भौतिक पदार्थों के लिए ही थोड़े ही है? जीवन में धर्म की साधना भी चलनी चाहिए और भौतिक पदार्थों की महत्त्वाकांक्षा का तो परिसीमन होना ही चाहिए। जैन श्रावकाचार में जो इच्छा परिमाण की बात कही गई है, वह इसी संदर्भ में है कि अर्थ और भौतिक चीजों में इच्छाओं का परिसीमन हो। अगर अहंकार और महत्त्वाकांक्षा है तो वह अध्यात्म की दृष्टि से ठीक नहीं। वे त्याज्य हैं। इसलिए अगर अध्यात्म का विकास करना है तो दोनों को छोड़ देना चाहिए। अब रही बात धार्मिक स्थलों में धार्मिक संस्थाओं के द्वारा सम्मानित किए जाने की तो सम्मान मिलने से अहंकार आ ही जाएगा, यह कोई अविनाभावी या निश्चित बात नहीं लगती। सम्मान मिलने पर भी निरहंकार में रहा जा सकता है। सम्मान मिलने से और ज्यादा अच्छा काम करने की प्रेरणा भी मिल सकती है। विशेष साधना की बात तो यह होगी कि सम्मान मिल रहा हो तो आदमी विनम्रतापूर्वक यह कह दे कि मुझे व्यक्तिगत रूप में यह सम्मान स्वीकार नहीं है। मेरी ओर से मंगलकामना, शुभकामना और आभार, मैं यह सम्मान लेना नहीं चाहता। यह उसका विशेष त्याग होगा।

प्रश्न :- समाज में अपने को विशिष्ट दिखाने की प्रवृत्ति कहां तक जायज है या गलत है या सिर्फ अहंकार को पोषित करने का साधन है?

उत्तर :- विशिष्ट दिखाने का प्रयास अगर अहंकार के रूप में है तो अध्यात्म की दृष्टि से यह कोई अच्छी बात नहीं है। अहंकार की दृष्टि से कोई स्वयं को बड़ा दिखाने की भावना रखता है तो अध्यात्म की दृष्टि से यह त्याज्य है। सामाजिक दृष्टि से अलग बात हो सकती है। वहां कोई स्वयं को बड़ा और विशिष्ट दिखाए तो वह समाज का एक अलग मुद्दा है। लेकिन अध्यात्मयुक्त समाज में स्वयं को बड़ा और विशिष्ट दिखाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। क्योंकि इससे आध्यात्मिक प्रगति बाधित होती है।

प्रश्न :- सम्यक्त्व का निश्चयात्मक बोध कब संभव होता है?

उत्तर :- सम्यक्त्व का तब तक उत्पादन नहीं हो सकता, जब तक अनंतानुबंधी कषाय का उदय रहता है। अनंतानुबंधी कषाय और दर्शनत्रिक का विलय हो जाता तो फिर सम्यक्त्व में कोई बाधा नहीं रहती। किन्तु सम्यक्त्व का निश्चयात्मक ज्ञान होना अतीन्द्रिय ज्ञान के बिना कठिन है।

प्रश्न :- कर्म और भाग्य किस प्रकर अपना कार्य करते हैं? कहते हैं भाग्य अपना रास्ता खुद बनाता है, क्या यह सत्य है?

उत्तर :- कर्म और भाग्य वैसे तो एक ही चीज है। कर्म कहो, चाहे भाग्य कह दो, एक ही बात है। भाग्य अगर प्रबल है तो बाहर के निमित्त भी सुलभ हो जाते हैं और भाग्य अपना चमत्कार दिखा देता है। गुरुदेव तुलसी लगभग बाईस वर्ष की अवस्था में तेरापंथ के आचार्य बन गए थे तो मेरा यह अनुमान है कि यह उनके पिछले जन्म की या जन्मों की तपस्या-साधना थी, जो भाग्य रूप में सामने आ गई थी। उसका उदय हुआ तो वे इतनी कम उम्र में इतने महान और अनुशासित धर्मसंघ के आचार्य बन गए। माना जा सकता है कि इसमें उनके भाग्य ने काम किया था। वैसे इस जन्म का उनका योग्यता विकास तो था ही, लेकिन उससे भी ज्यादा रोल उनके भाग्य का था, ऐसा मेरा मानना है।

प्रश्न :- जब नियति ने निर्धारित कर दिया है कि क्या होने वाला है, तब कर्ता का भाव मात्र अहंकार का पोषक है या हमारी भ्रान्ति?

उत्तर- नियति ने किया नहीं, किया तो करने वाले ने ही है। अब रही बात अहंकार की, यदि कर्ता का उद्देश्य तथ्य को बताना या वस्तुस्थिति को स्पष्ट करना है तो इसमें मुझे अहंकार जैसी कोई बात नहीं लगती। जैसे--किसी अध्यापक ने किसी विद्यार्थी को पढ़ाया है। अध्यापक इस तथ्य को बता रहा है कि मैंने इसे कभी पढ़ाया था या मुझे इसे पढ़ाने का मौका मिला था, मैंने इस पर श्रम किया था। इस प्रकार वह वस्तुस्थिति को तटस्थ भाव से बता रहा है तो यह तथ्य है कि उसने ऐसा कर्तृत्व किया था, इसमें कोई अहंकार की बात नहीं लगती। अहंकार तब कहा जाएगा, जब आदमी दिखावे के लिए, ख्याति पाने के लिए कुछ बताए या करे, वहां कोई अहंकार की बात हो सकती है। अपने कर्तृत्व को तटस्थ भाव से बताना या स्पष्ट करना मुझे तो अहंकार जैसा नहीं लगता।

प्रश्न : क्या जैनधर्म में नवरात्र का महत्त्व है? अगर नहीं है तो नवान्हिक अनुष्ठान आराधना क्यों की जाती है?

उत्तर :- वैसे तो जैनधर्म में पर्युषण या दसलक्षण पर्व का बहुत महत्त्व है। किन्तु अन्य दिनों में कोई जप अनुष्ठान करे, नवरात्र में विशेष रूप से करे तो जैनधर्म में इसका कोई निषेध नहीं है। जिसका निषेध नहीं है और वह ठीक लग रहा है तो उसे करने में आपत्ति क्यों होनी चाहिए? यह ठीक है कि पर्युषण का महत्त्व कम हो जाए, ऐसा कोई काम नहीं होना चाहिए, अन्य समय में कोई साधना, धर्माराधना करे तो इसमें कोई आपत्ति की बात नहीं लगती।

प्रश्न :- हम जैन सिद्धान्तों को आम जनता के लिए किस प्रकार ज्यादा स्वीकार्य और लाभदायक बना सकते हैं?

उत्तर :- जनता तक जैन विद्या से संबद्ध साहित्य पहुंचाया जाए, जैन धर्म और दर्शन के बारे में जानकारी दी जाए, इस संदर्भ में कार्यशालाएं और संगोष्ठियां आयोजित हों तो जैन सिद्धान्तों का अच्छा प्रचार-प्रसार हो सकता है। जैन दर्शन के अध्येता और अधिकृत विद्वान व्यक्ति जैन तत्त्व दर्शन का अच्छा विवेचन कर सकते हैं। उनके द्वारा यह कार्य और अच्छी तरह से हो सकता है। जैन समाज से संबद्ध विद्यालयों में जैनविद्या को पढ़ाने का यथासंभव और यथोचित प्रयास भी होना चाहिए।

प्रश्न :- ऐसा ज्ञात हुआ कि प्लास्टिक की माला फेरने से शक्ति क्षीण होती है, इसमें कितनी सचाई है? हमें किस तरह की माला का प्रयोग करना चाहिए? रुद्राक्ष, स्फटिक, काष्ठ या कुछ अन्य?

उत्तर : इस संदर्भ में पहले तो यह जान लें कि जप के लिए माला हाथ में लेना जरूरी नहीं है। माला हाथ में ली है तो इसलिए कि हमारी एक सौ आठ की संख्या व्यवस्थित हो जाए। इस रूप में माला कुछ सहायक बन सकती है और तो माला के बिना भी जप किया जा सकता है। अगर अंगुलियों के पोरों पर माला फेरने का अच्छा अभ्यास हो जाए तो प्लास्टिक की ही नहीं, किसी भी प्रकार की माला की

कोई जरूरत नहीं रह जाएगी और कुछ संग्रह भी कम हो सकेगा। प्लास्टिक की माला फेरने से शक्ति क्षीण होने की बात हमारी जानकारी में नहीं है।

प्रश्न :- दैवसिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में क्रमशः ४, १२, २० और ४० लोगस्स किया जाता है। इसका क्या रहस्य है तथा किस आगम के आधार पर ऐसा किया जाता है?

उत्तर :- आगम बत्तीसी में चार, बारह, बीस या चालीस लोगस्स का कोई उल्लेख हमारी जानकारी में नहीं है। वैसे प्रतिदिन के प्रतिक्रमण में चार लोगस्स के क्रम की व्यवस्था है तो अच्छी। इससे प्रतिक्रमण थोड़ा अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इससे हमारी साधना भी कुछ विकसित हो सकती है। दैवसिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कालावधि (एक पक्ष, एक माह आदि) ज्यादा होने से क्रमशः अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। इस दृष्टि से इसके साथ लोगस्स की संख्या बढ़ना अच्छा है तथा उससे हमारी साधना और अधिक बढ़ सकती है।

प्रश्न :- यदि किसी का उपकार करने से किसी अन्य का अथवा स्वयं का नुकसान हो रहा हो तो भी क्या परोपकार करना चाहिए?

उत्तर :- विशुद्ध भावना और विशुद्ध तरीके से किसी की आत्मा का उत्थान करना आध्यात्मिक उपकार है। इस उपकार से तो स्वयं का नुक्सान होने की संभावना लग ही नहीं रही है। जिसकी आत्मा का उत्थान किया जा रहा है, उसकी आत्मा की भलाई ही होगी। इस प्रक्रिया से किसी तीसरे का कोई भौतिक नुक्सान हो जाता है तो वहां यदि भावना किसी के नुक्सान की नहीं है तो उपकार करने वाला और उपकृत, दोनों आध्यात्मिक दृष्टि से लाभ के सौदे में हैं। तीसरे का कोई भौतिक नुक्सान हो तो वह जाने। किसी का नुक्सान करने का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। उचित तरीके से दूसरों का यथासंभव आध्यात्मिक उपकार करने का प्रयास करना चाहिए। यदि किसी एक पर आध्यात्मिक उपकार करने से किसी दूसरे का अथवा स्वयं का कोई आध्यात्मिक लाभ बाधित हो तो वहां उपकारकर्ता को विवेक करना चाहिए कि किस पर उपकार करना ज्यादा उचित है और लाभदायी है? इसी प्रकार भौतिक उपकार के विषय में भी विवेक को महत्त्व देना चाहिए।

प्रश्न :- आज के युग में भौतिक संसाधनों का बोलबाला है। ऐसे में संस्कारों से विमुख होती बाल और युवापीढ़ी में संस्कारों का निर्माण कैसे किया जा सकता है?

उत्तर :- बाल और युवापीढ़ी को शिक्षा और संस्कारों की दृष्टि से समुन्नत बनाने के लिए अनेक उपक्रम हो सकते हैं। बालपीढ़ी के लिए ज्ञानशालाएं चलती हैं। यह संस्कारों की दृष्टि से काफी प्रशस्त उपक्रम है। ज्ञानशालाओं में बच्चों को भेजा जाए तो उनमें जैन विद्या का ज्ञान और संस्कारों के बीजारोपण की अच्छी संभावना बन सकती है। इससे भौतिकता के बीच जीने वाले बच्चों को आध्यात्मिकता का भी रसास्वादन मिल सकेगा। जहां-जहां भी बच्चों के लिए ज्ञानशाला लगती हों, अभिभावक अपने बच्चों को जैन विद्या का प्राथमिक ज्ञान और संस्कार देने के लिए वहां भेजने का प्रयास करें।

दूसरा उपक्रम है--जीवनविज्ञान, जो परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी के द्वारा प्रस्तुत किया गया। वह भी विद्यार्थी को अच्छे संस्कारों में ढालने का एक प्रयास है। इसके अलावा धर्मगुरुओं का भी यह दायित्व बनता है कि वे अपने-अपने संप्रदाय के बालकों और युवकों पर ध्यान दें, उन्हें प्रेरणा दें, उनके शिविर लगाएं, उन्हें कुछ क्लास रूप में बताएं और समझाएं तो इससे भी अच्छे संस्कार आ सकते हैं। बालक और युवक यदि टीवी में धर्मगुरुओं के प्रवचन भी देखते और सुनते हैं तो उनसे भी अच्छे संस्कार मिल सकते हैं। माता-पिता भी अपने बच्चों को यथासंभव संस्कार देने का प्रयास करें। बालकों और युवकों को सत्साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दी जाए। उससे भी आध्यात्मिकता के संस्कार आ सकेंगे। इस प्रकार अनेक उपाय हैं, जिनके द्वारा बच्चों और युवकों को संस्कारी बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

प्रश्न :- कहा जाता है कि पंचम अर में मोक्ष नहीं जा सकते। फिर इस युग में साधना क्यों करें?

उत्तर :- पंचम आरे में मोक्ष नहीं जा सकते तो कोई बात नहीं, मोक्ष को निकट तो किया ही जा सकता है। कोई चीज, जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं, सौ कोस दूर है, अगर वह पांच कोस की दूरी पर आ जाए, निकटतर हो जाए तो क्या यह फायदे वाली बात नहीं है? मोक्ष न मिले तो मोक्ष को निकट करने के लिए पंचम अर में साधना करनी चाहिए? मोक्ष की बात को एक बार गौण भी कर दें तो भी वर्तमान जीवन को सुखमय, शान्तिमय और आत्मा को निर्मल बनाने के लिए भी साधना अपेक्षित है।

प्रश्न :- अनेकान्त सिद्धान्त के अनुसार सब सापेक्ष है। फिर किसी की श्रद्धा को मिथ्या कैसे कहा जा सकता है?

उत्तर :- अनेकान्त यह नहीं कहता कि सब कुछ सत्य है। उदाहरण के लिए एक आदमी कहता है कि न स्वर्ग-नरक है, न मोक्ष है, न आत्मा है, न परमात्मा है, न पुण्य-पाप है। आगे कुछ भी नहीं है, इसलिए धर्म-कर्म कुछ भी मत करो, खूब ऐशो-आराम का जीवन जीओ, कर्ज लेकर घी पीओ। क्या अनेकान्त की दृष्टि से इसे भी सम्यक श्रद्धा मानेंगे कि मोक्ष है ही नहीं, आत्मा है ही नहीं? क्या आनेकान्तिक दृष्टि से इसे सही मानकर धर्म करना बंद कर दें? **क्रमशः**

पाठक ध्यान दें

विज्ञप्ति पाठकवर्ग द्वारा प्रेषित जिज्ञासाओं का समाधान परमपूज्य आचार्यप्रवर कर रहे हैं। पाठक अपनी विविध विषयक जिज्ञासाएं campoffice13@gmail.com पर प्रेषित कर सकते हैं। चयनित जिज्ञासाएं ही आचार्यवर द्वारा प्रदत्त समाधान के साथ यथासमय विज्ञप्ति में प्रकाशित की जा सकेंगी। इस संदर्भ में अग्रांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं--

- जिज्ञासा संक्षिप्त, सारपूर्ण और स्पष्टतया लिखित हो।
- पत्र पर 'जिज्ञासा' शीर्षक अवश्य लिखें।
- जिज्ञासा अपने नाम और सम्पर्क सूत्र के साथ ही प्रेषित करें। अन्य कोई बात पत्र में न लिखें।
- जिज्ञासा प्रेषित करने के पश्चात् उत्तर प्राप्ति हेतु फोन, पत्र व्यवहार आदि न करें।

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण टापरा की ओर

करुणा से भावित हो हृदय

१२ दिसम्बर। फलसूण्ड प्रवास का चतुर्थ अैर अन्तिम दिन। परम पावन आचार्यप्रवर तेरापंथ भवन में पधारे। वहां कुछ क्षण विराजमान होकर आचार्यवर ने 'हमारे भाग्य बड़े बलवान्' गीत का संगान किया। पूज्यप्रवर ने तेरापंथ समाज के अवशिष्ट घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। अनेक जैनेतर लोगों की बलवती प्रार्थना पर पूज्यवर ने उनके घरों में भी चरणस्पर्श किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व साध्वी चारित्रयशाजी और साध्वी वर्धमानयशाजी ने सुमधुर भावपूर्ण गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधु जीवन का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है--अहिंसा। साधु का जीवन प्राण-बध से विरत होता है। उनके जीवन के बहुत सारे नियम अहिंसाधारित होते हैं। साधु का हृदय करुणा से भावित रहना चाहिए। उसे दयामूर्ति होना चाहिए। अहिंसा उसका जीवनव्रत होता है। उसे उस व्रत के प्रति जागरूक रहना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने आज कृष्णा चतुर्दशी के अवसर पर हाजरी का वाचन करते हुए कहा--'हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें भैक्षव शासन मिला है। शासन की मर्यादाओं के प्रति हमारे मन में निष्ठा और सम्मान का

भाव रहे। पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्तियां--इन तेरह नियमों की सम्यक् अनुपालना अपने आप में साधुत्व है। हम शासन के प्रति निष्ठाशील और अपनी मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहें। हमारे मन में वैराग्य भावना और समाधि रहे। हम आत्मसाधना करते हुए श्रेय की ओर गतिमान रहें।'

पूज्य आचार्यवर के प्रवचन के उपरान्त नवदीक्षित साधु-साध्वियों ने लेखपत्र का उच्चारण किया। आचार्यवर ने प्रोत्साहनस्वरूप लेखपत्र उच्चरित करने वाले प्रत्येक साधु-साध्वी को दो-दो कल्याणक बक्सीस किए। तत्पश्चात् उपस्थित सभी साधु-साध्वियों ने सामूहिक रूप से लेखपत्र का उच्चारण किया। आचार्यवर ने फलसूण्ड निवासिनी श्राविका **श्रीमती सुआदेवी कोचर** की तपस्या और श्रद्धा भावना का उल्लेख करते हुए उन्हें **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया।

कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यवर मुनि महावीरकुमारजी के जन्मस्थल पर पुनः पधारे। कोचर परिवार पूज्यवर के महान अनुग्रह को प्राप्त कर अभिभूत था। ठाकुर परिवार सहित बड़ी संख्या में जैनेतर समाज के घरों में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ।

पूज्य आचार्यवर का चारदिवसीय फलसूण्ड प्रवास अत्यन्त कार्यकारी और प्रभावक रहा। पूरे गांव में अलौकिक वातावरण बना रहा। स्थानीय पैंतीस तेरापंथी परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। लोगों ने इस दौरान विविध संकल्प स्वीकार किए। पूज्यवर ने सभी श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया। गांव के अधिकांश जैनेतर समाज के घर भी पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन हुए। रात्रिकालीन कार्यक्रमों में भी सैकड़ों जैनेतर व्यक्ति उपस्थित रहते। पूज्य आचार्यप्रवर ने रोचक दृष्टान्तों और सरस संगान के साथ उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। उपस्थित जनता की श्रद्धा भावना को देखकर जैन और जैनेतर का भेद कर पाना मुश्किल था। चार दिन तक फलसूण्ड और उसके पार्श्ववर्ती गांव और ढाणियां अध्यात्म के रंग में सराबोर रहीं। तेरापंथ के २५२ वर्षों के इतिहास में जैसलमेर जिले और उसके अंतर्गत इस छोटे से गांव फलसूण्ड में तेरापंथ के आचार्य का यह प्रथम प्रवास था।

विश्वसनीय बन जाता है सत्यवादी

१३ दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर आज प्रातः फलसूण्ड से आठ किमी. का विहार कर 'पारासर' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मनुष्य के पास भाषा है। सब प्राणियों के पास यह नहीं होती। व्यक्ति क्रोध, लोभ, भय, हास्यवश झूठ बोल देता है। यदि वह अणुव्रत को स्वीकार कर उसका पालन करे तो उसके जीवन में सत्य, ईमानदारी और संयम का समावेश हो सकता है। प्रामाणिकता का एक रूप है--सत्यवादिता। व्यक्ति झूठ बोलकर अपना काम निकाल लेता है, किन्तु इससे जिस पाप कर्म का बंध होता है, उसे भोगना होता है। झूठ के द्वारा आत्मा मलिनता को प्राप्त होती है, इसलिए व्यक्ति को सत्य की साधना करनी चाहिए। जो सत्य को आत्मसात् कर लेता है, वह दूसरों के लिए विश्वसनीय बन सकता है। जीवन की एक संपदा है--ईमानदारी। उसे बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। बोलने के बाद सोचना पड़े, उससे अच्छा है सोच कर बोला जाए। जबान पर लगाम रखने का अभ्यास जीवन का एक सद्गुण होता है। आत्मकल्याण के लिए झूठ से बचने का प्रयास श्रेयस्कर होता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रवचन के उपरान्त कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया।

आज सायंकाल आकाश मेघाच्छादित हो गया। रात्रि में ठंडी हवा के साथ होने वाली हल्की बूंदाबांदी सर्दी की प्रखरता की आहट लिए हुए थी।

खिलग्या म्हारा भाग

१४ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः पारासर से 'केसुम्बला भाटियान' की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में जैसलमेर जिले की सीमा समाप्ति के साथ आचार्यवर ने पुनः बाड़मेर जिले की सीमा में प्रवेश किया। लगभग तीन किमी. कच्चे पथ सहित लगभग ६.०५ किमी. का विहार कर आचार्यवर केसुम्बला भाटियान पधारे। तेरापंथ के अब तक के इतिहास में प्रथम बार आचार्यवर के पदार्पण से ग्रामवासियों का उत्साह चरम पर था। गोबर-मिट्टी से बने कच्चे मकानों में रहने वाले भक्तों की श्रद्धा-भक्ति मानों सीमेंटेड थी। वे भगवानतुल्य अपने आराध्य को पाकर कृतार्थता की अनुभूति कर रहे थे। यहां की भूमि में प्रचुर मात्रा में उगे हुए आक आदि बंजर भूमि की स्थिति को दर्शा रहे थे। 'आकड़िया बावळिया है, नहीं है दाड़िम दाख। गुरुदेव म्हारै आज पधार्‌या, खुलग्या म्हारा भाग' जैसे नारे श्रद्धालुओं की आन्तरिक श्रद्धा को अभिव्यक्ति दे रहे थे। पूज्यप्रवर का प्रवास स्थानीय बाबा रामदेव मन्दिर परिसर में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री मेघराज बुरड़, तेयुप की ओर से श्री राजेन्द्र लोढ़ा, श्री मांगीलाल बुरड़, श्री भूपेन्द्र लोढ़ा, श्री सवाई वडेरा, मंजु सालेचा, सायर बुरड़, सरूपी बुरड़, बालक जसराज, मनोज बुरड़ आदि ने अपने आराध्य के स्वागत में अभिव्यक्ति दी। गांव के सरपंच श्री खीमाराम सुथार ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। जसोल रावले के श्री किशनसिंहजी ने जसोल रियासत के अन्तिम गांव केसुम्बला भाटियान में आचार्यवर की अभ्यर्थना की। मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में सत्संग के महत्त्व को प्रतिपादित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति को वर्तमान पर दृष्टिपात करना चाहिए, पर यदा-कदा भविष्य के लिए भी सोचना चाहिए कि आगे मेरा क्या होगा? इस प्रकार अगले जन्म पर ध्यान देने का तात्पर्य है साधना में और अधिक जागरूक होने का प्रयास करना। वर्तमान जीवन साधना में व्यतीत होता है तो अगला जन्म भी अच्छा होने की संभावना रहती है। व्यक्ति इस जीवन में पाप करता है तो अगली गति खराब होने की संभावना रहती है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'जीवन में यदि दुर्गुण हैं तो उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए। जिस प्रकार कांटे की चुभन कष्टप्रद होती है, और निकालने पर शान्ति का अनुभव होता है, उसी प्रकार दुर्गुण एक प्रकार का कांटा है। वह जब तक जीवन में रहता है, चेतना मलिन रहती है। उसे दूर करने पर चेतना निर्मल बन जाती है। व्यक्ति गुणों से सज्जन और दुर्गुणों से दुर्जन बनता है। वह यह सोचे कि मुझमें क्या-क्या बुराइयां हैं? उन्हें पहचान कर उनको त्यागने का तथा अच्छाइयों को आत्मसात् करने का प्रयास करने वाला व्यक्ति अपने इस जीवन को पवित्र और अगले जन्म को भी अच्छा बना सकता है।'

पूज्यप्रवर ने केसुम्बला भाटियान आगमन के संदर्भ में कहा--'आज हम केसुम्बला भाटियान आए हैं। ज्ञात हुआ कि शिष्या साध्वी राकेशकुमारीजी (बायतू) का यह पैतृक गांव है। वे अग्रणी साध्वी हैं। वे अध्यात्म साधना का विकास और धर्मसंघ की सेवा करती रहें।' पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के पश्चात कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

केसुम्बला भाटियान में बुरड़ परिवार के बारह और लोढ़ा परिवार के तीन--इस प्रकार पन्द्रह तेरापंथी परिवार हैं। रात्रि में परिवारिक सेवा-उपासना का क्रम भी चला। लोगों ने आचार्यवर से विविध संकल्प ग्रहण किए।

धर्म है जीवनरूपी रथ का सारथी

१५ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः केसुम्बला भाटियान से 'लालू सियाग की ढाणी'

के लिए विहार किया। मार्ग में केसुम्बला के सभी श्रद्धालु परिवारों के घरों का पूज्यवर ने स्पर्श किया। आचार्यवर के इस अनुग्रह के प्रति केसुम्बलावासी श्रद्धाप्रणत थे। आचार्यवर ७.०८ किमी. का विहार कर 'लालू सियाग की ढाणी' पधारे। आजका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'गृहस्थ जीवन में भोग चलता है, किन्तु भोग पर योग का अंकुश रहना चाहिए। उन्मुक्त भोग समस्याओं का सर्जक बन सकता है। अल्पकालिक सुख के लिए दीर्घकालिक दुःख उठाना बुद्धिमत्ता नहीं होती। जैन वाङ्मय में गृहस्थ के लिए स्वदार संतोष व्रत का उल्लेख मिलता है। व्रत अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधायक बन सकता है। गृहस्थ जीवनरूपी रथ के दो पहिये बताए गए--अर्थ और काम। धर्म उस रथ का सारथी है, जो उन पर नियंत्रण रखता है। निरंकुश अर्थ और काम अनर्थकारी हो सकते हैं।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया।

जीवन बने समीचीन व पावन

१६ दिसम्बर। प्रातः आठ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'सवाऊ पदमसिंह पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में अपनी पैतृक भूमि की ओर से मुनि रजनीशकुमारजी ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की। गांव में श्रद्धालु बालड़ परिवार के चार घर हैं। कुछ परिवार बायतू, बालोतरा आदि क्षेत्रों में बस गए हैं। इस परिवार से श्री सोहनलाल, गौतमचन्द, ऋषभ, पीयूष आदि ने अपने विचार रखे। परिवार की कन्याओं, अमृत व कमलेश ने गीत का संगान किया। सरपंच श्री रतनाराम जाखड़ ने समागत लोगों का स्वागत किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'संत चरण जिस धरती पर टिकते हैं, वहां धार्मिक जागरण हो जाता है। गुरु का जहां पदार्पण होता है, वहां ज्ञान-गंगा प्रवाहित हो जाती है। इस पावन गंगा में निमज्जन कर आप सभी अपने हृदय को पवित्र बनाएं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'इच्छाएं व कामनाएं आकाश की तरह अनंत हैं। मोहग्रस्त मूढ़ व्यक्ति असंतोष परायण होते हैं, जबकि पंडित, ज्ञानी, संयमी संतोष को धारण कर लेते हैं। संतोष वास्तव में परम सुख होता है। सभी इच्छाओं की संपूर्ति कठिन है। व्यक्ति को इच्छाओं के परिसीमन का, अल्पेच्छ बनने का प्रयास करना चाहिए। वह आसक्त न बने। इच्छाएं बढ़ाने से बढ़ती हैं और संतोष धारण करने पर सीमित भी हो सकती हैं। अर्थार्जन में व्यक्ति नैतिकता तथा उपभोग में संयम व विवेक रखे। इससे जीवन समीचीन व पावन बन सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मुनि रजनीशकुमारजी हमारी सेवा करने वाले संत हैं। इन्होंने गुरुदेव महाप्रज्ञजी की भी खूब सेवा की है। हमारी साधु व्यवस्था में भी इनका योगदान रहता है। सवाऊ पदमसिंह इनकी पैतृक भूमि है। स्वास्थ्य को अच्छा रखते हुए ये अपनी साधना करते रहें। इसी भूमि से जुड़ी साध्वी मार्दवयशाजी व साध्वी धवलप्रभाजी भी अच्छा विकास करें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

त्रिमूर्ति के लिए तीन सूत्र

सायं अर्हत् वंदना के पश्चात् आचार्यवर ने त्रिमूर्ति (तीन बाल मुनियों) को विशेष रूप से शरीर के वजन के बारे में पूछा। मुनि विवेककुमारजी, मुनि रम्यकुमारजी व मुनि ध्रुवकुमारजी ने अपना-अपना वजन तीस के आसपास बताया। आचार्यवर ने त्रिमूर्ति पर वात्सल्य की वृष्टि करते हुए कहा--'तुम यह संकल्प करो कि सन २०१४ तक शरीर का वजन दस-दस किलोग्राम तक बढ़ाना है। यह वजन केवल एक दिशा में ही नहीं, दोनों दिशाओं में बढ़े, अर्थात् लम्बाई भी बढ़े और चौड़ाई भी।' आचार्यवर ने त्रिमूर्ति को तीन सूत्र प्रदान किए--अच्छा खाओ, अच्छा सीखो और अच्छी सेवा करो। इन सबके साथ अच्छी साधना चले।'

अपने आराध्य से स्नेहिल आशीर्वाद प्राप्त कर भक्त बाल गोपाल त्रिमूर्ति ने गुरु के चरणों में श्रद्धाप्रणति की और आभार प्रकट किया।

रेतीले धोरों के बीच बही धर्म की धारा

१७ दिसम्बर। प्रातः पन्द्रह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर कानोड़ पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। आज की यात्रा विशाल व उन्नत रेतीले धोरों के बीच चली। कोसों दूर तक मात्र टीले ही टीले नजर आ रहे थे। उनके बीच बसी ढाणियों के निवासियों का जीवन काफी कठोर है। विहार में कई किलोमीटर चलने पर स्थानीय लोग यदा-कदा मिलते। आज की यात्रा में कई उतार-चढ़ाव पार करने पड़े। मार्ग में जगह-जगह हिरणों के झुंड दिखाई दिए। आज के युग में प्रायः क्षेत्रों में सड़कों का जाल बिछा हुआ है। यात्रा में साथ चलने वाले सेवार्थियों के वाहन कुछ घुमाव लेकर भी पक्के मार्ग से चलना पसन्द करते हैं। अन्यथा इन रेतीले टीलों में चलना कितना दुष्कर होता। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर लगभग साढ़े दस बजे गांव में पधारे।

विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में इस गांव से जुड़े तातेड़-कोठारी व बागरेचा परिवार के काफी सदस्य उपस्थित थे। उपासक श्री सोहनराज तातेड़, श्री सुमेरमल तातेड़, श्री जीवराज, श्री मोहनलाल, श्री दामोदरलाल एवं श्रीमती रानीबाई ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। तातेड़ परिवार की बहनों ने गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में स्वयं की पहचान करने की प्रेरणा दी।

दो बार सांसद रहे बायतू क्षेत्र के विधायक कर्नल सोनाराम चौधरी ने अपने विधानसभा क्षेत्र की ओर से पूज्यवर का स्वागत करते हुए कहा--'आचार्य महाश्रमण हमारे देश के महापुरुष हैं। ऐसे महापुरुष का इस ग्रामीण क्षेत्र में पदार्पण हमारे सौभाग्य का प्रतीक है। पूज्य आचार्यश्री इन छोटी-छोटी ढाणियों में पधारते हैं, प्रवचन करते हैं, इसे मैं मानवता की सबसे बड़ी सेवा मानता हूं। आपके त्याग और तप से मैं बहुत प्रभावित हूं। आपके सन्देश का कुछ अंश भी जीवन में उतर जाए तो जीवन बदल सकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन दर्शन का एक तात्विक शब्द है--आश्रव। आश्रव वह मार्ग है, जिससे कर्म का आगमन होता है। अनाश्रव कौन हो सकता है और कैसे हो सकता है, इस संदर्भ में वर्णित कई बातों में एक है रात्रि भोजन विरमण। जीवन को टिकाए रखने के लिए भोजन की अनिवार्यता है। चौबीस घंटे में आदमी कितनी बार आहार करता है, चाय आदि पेय पीता है। आदमी दिन में खाता है, रात में खाता है और देर रात में भी खाता है। चौबीस घंटे में दो कालखण्ड हैं--दिन और रात। दिन अर्थात् सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय और रात्रि अर्थात् सूर्यास्त से सूर्योदय तक का समय। रात्रि के कालखण्ड में भोजन के परिहार का संकल्प रहे, यह महत्त्वपूर्ण है। साधु के लिए तो रात्रि भोजन विहित ही नहीं है, यथासंभव गृहस्थ भी रात्रि भोजन से बचने का प्रयास करें। इसके लिए दिनचर्या को थोड़ा सेट करना पड़ेगा।'

रात्रि भोजन विरमण की महत्ता को रेखांकित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'अहिंसा इसका सबसे बड़ा आधार है। रात्रि भोजन से त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा की संभावना रहती है। संयम इसका दूसरा आधार है। भोग संयम साधना का सूत्र है। रात्रि भोजन का त्याग होने से संयम होता है। अव्रत रुक गया और अनाश्रव हो गया।

तीसरा आधार है--स्वास्थ्य। सूर्यास्त के बाद भोजन करना स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक हो सकता है। हमारे यहां अधिवेशन एवं सम्मेलन आयोजित होते हैं। इन वर्षों में देखा है और ज्ञात हुआ है कि उस समय रात्रि भोजन नहीं होता। यह अच्छी बात है। प्रत्येक व्यक्ति रात्रि भोजन विरमण का प्रयास करे।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'कानोड़ तातेड़-कोठारी, बागरेचा परिवारों के पुरखों की भूमि है। साध्वी मौलिकयशा (टापरा) की यह संसारपक्षीय पैतृक भूमि है। वे खूब आध्यात्मिक विकास करती रहें।' आचार्यवर ने गांववासियों को नशामुक्ति की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ज्ञान व समझ के साथ सहनशक्ति भी विकसित हो

१८ दिसम्बर। आज प्रातः आचार्यवर लगभग १२ किमी. का विहार कर 'शहर' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में इस गांव से जुड़े श्री चुन्नीलाल रावतमल तातेड़ परिवार की ओर से श्री रावतमलजी, मोनिका, कमलेश व परिवार की बहनों ने गीत का संगान किया। श्री उच्छव, महेन्द्र, मास्टर कीर्तानंदजी, सरपंच श्री खेमाराम सारण ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी पावनयशाजी ने अपनी पैतृक भूमि की ओर से पूज्यप्रवर का स्वागत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'वीतराग द्वारा प्ररूपित धर्म मंगल है, लोकोत्तम है और शरण है। अहिंसा, संयम व तप उस धर्म के प्रकार हैं। जो व्यक्ति आवेशमुक्त होता है, वह अहिंसा की साधना कर सकता है।' उपस्थित विद्यार्थियों की ओर उन्मुख होते हुए आचार्यवर ने कहा--'विद्यार्थी जीवन में अहिंसा का संस्कार प्रादुर्भूत हो जाए तो घर, परिवार, समाज व देश में शान्ति रहेगी। विद्यार्थियों में अहिंसा के संस्कार जगाने के लिए तथा उनके समग्र विकास के लिए जीवनविज्ञान का प्रकल्प प्रस्तुत हुआ। बच्चों में ज्ञान व समझ की शक्ति के साथ सहिष्णुता की शक्ति का विकास अपेक्षित है। मात्र ज्ञान के विकास से सर्वांगीण विकास संभव नहीं, बच्चों में भावात्मक विकास भी हो और सदाचार के संस्कार भी आएं।'

पूज्य आचार्यवर ने आगे कहा--'मनुष्य में संयम की चेतना जागे। अणुव्रत का सूत्र है--संयम ही जीवन है। संयमित व सादगीपूर्ण जीवन मानव जीवन का शृंगार है। संयम के जागरण से नशामुक्ति का कार्य आगे बढ़ सकता है। आज हम शहर गांव में आए हैं। जसोल का तातेड़ परिवार इस गांव से संबद्ध है। अभी जसोल में दीक्षित साध्वी पावनयशा का अपने पुरखों की धरती पर हमारे साथ आना हुआ है। ये खूब विकास और अच्छी साधना करती रहें। सभी लोग यथासंभव धर्म की साधना करते हुए धर्मसंघ की प्रभावना करने का प्रयास करें।' पूज्य आचार्यप्रवर ने विद्यार्थियों को नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प करवाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

वर्धापना श्रमण संस्कृति उद्‌गाता की

(जसोल में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुम्बई द्वारा परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर को 'श्रमण संस्कृति उद्‌गाता' विरुद समर्पित किए जाने के बाद स्थान-स्थान से वर्धापना पत्र प्राप्त हुए। उनमें से कुछ पत्रों को हमने पूर्व विज्ञप्तियों में प्रकाशित किया था। उसी क्रम में प्रस्तुत हैं यहां कुछ और अभ्यर्थना पत्र)

'तेरापंथ धर्मसंघ की अनुपमेय विरल कृति, श्रमण संस्कृति के उद्‌गाता, शान्तिदूत परमपूज्य आचार्यप्रवर के चरणों में सादर निवेदन।

गुरुदेव! आपके आचार्यकाल में जिनशासन की उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है, साथ ही आपके अल्पकालिक आचार्यकाल में अनेक नये कीर्तिमान बन रहे हैं। आप जैसे महापुण्यशाली महातपस्वी श्रमनिष्ठ, गुरुनिष्ठ, दस-दस आचार्यों की पुण्यायी प्राप्त आचार्य को भारतवर्षीय दिगम्बर तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुम्बई द्वारा 'दिव्यावदान' आलेख व 'श्रमण संस्कृति उद्‌गाता' विरुद समर्पित किया गया। तेरापंथ के इतिहास का यह स्वर्णिम प्रसंग है। हम सबको जो हर्ष हुआ, उसे शब्दों में व्यक्त कर पाना संभव नहीं। एक अनुपमेय विरल कृति, जिसे

दूरद्रष्टा, कुशल शिल्पी, महासृजनहार गणाधिपति गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने करकमलों से तराशा और तेरापंथ की गादी पर प्रतिष्ठित किया। आप जैसे धुरन्धर महाप्रतापी अनुशास्ता को पाकर हम कृतपुण्य हैं।

आपकी संयम साधना और अतिशायी आभा मानव सेवा, धर्मसेवा, तथा विश्व विकास की कमनीय कामना का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसी हर्ष व शुभकामना के साथ आपश्री के चरणों में यह पत्ररूपी भावना प्रस्तुत है। बारंबार वंदन सहित।

भिक्षु बोधि स्थल, राजनगर　　**मुनि जतनकुमार (लाडनूं)**

अर्हम्

जैन धर्म के उज्ज्वल नक्षत्र, भैक्षव शासन के सरताज, शान्तिदूत, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के करकमलों में अर्पित भावना--

प्रभो! हम अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं। इस युग में ऐसे वर्चस्वी, तेजस्वी, यशस्वी अनुशास्ता को पाकर गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

भन्ते! ब्यावर, जहां अन्य सम्प्रदाय के हजारों घर हैं, सब अपने-अपने सम्प्रदाय के कट्टर हैं, जब उन लोगों के मुख से आचार्यवर के गुणगान सुनते हैं तो गौरव की अनुभूति होती है। नाकोड़ा जाने वाले जसोल में दर्शन करके आते हैं तो यहां आकर बताते हैं--''आचार्य महाश्रमणजी पुण्यायी के पुंज हैं। वहां क्या ठाठ लगा हुआ है, मानों साक्षात् तीर्थंकरदेव ही विराज रहे हैं। उनके पवित्र आभामंडल में मानों शान्ति का अनुभव होता है।'' भन्ते! सचमुच ब्यावर जैसे क्षेत्र में अन्य सम्प्रदाय के लोगों के मुख से सुनते हैं तो अत्यन्त आह्लाद और गौरव का अनुभव होता है।

दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुम्बई द्वारा अर्पित 'श्रमण संस्कृति उद्गाता' अलंकरण तथा 'दिव्यावदान' आलेख के गुणगौरव मंडित उन्नत भावों से परिपूर्ण आलेख पढ़कर लगा तपोनिष्ठ आचार्यश्री महाश्रमणजी के आचारनिष्ठ, श्रमनिष्ठ, साधनाशील जीवन का संपूर्ण जैन समाज खुले दिल से गौरव गा रहा है, वीतरागी साधना से जन-जन आकर्षित हो रहा है।

प्रभो! आरोग्यमय रहते हुए दीर्घकाल तक आप धर्मसंघ की अनुशासना करवाते रहें, यही मंगलकामना है।

सुशिष्या
साध्वी विद्यावती 'प्रथम'

अर्हम्

सन्तता के शिखरपुरुष, ऊर्जा के महापुंज, महातपस्वी, शान्तिदूत परमपूज्य आचार्यवर के श्रीचरणों में सादर सभक्ति विनम्र निवेदन

गुरुदेव!

आप भैक्षव शासन के मुकुटमणि हैं। आपकी कुशल शासना संघ को हिमालयी ऊचाइयां प्रदान कर रही है। जिनवाणी के प्रति आपकी अतिशयी अनुरक्ति सर्वतोभावेन समर्पणयुक्त भक्ति विरक्ति संवलित प्रवहमान चित्त की भावधारा जन-जन को अपनी ओर आकृष्ट कर रही है। इसी की फलश्रुति भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुम्बई द्वारा 'दिव्यावदान' आलेख आपश्री के पादपद्मों में उपहृत किया गया तथा 'श्रमण संस्कृति उद्गाता' अलंकरण से आपको नवाजा गया। प्रभो! पढ़कर, सुनकर हृदय आह्लाद से भर गया। दिगम्बर समाज के द्वारा श्वेताम्बर आचार्य का उन्मुक्त भावों से गुणोत्कीर्तन एवं श्रद्धा भावों से अभिनंदन सचमुच हम सबके लिए गौरव एवं गर्व का विषय है।

ऐसे तपस्वी महनीय एवं कमनीय व्यक्तित्व को अनुशास्ता के रूप में पाकर हमारा रोम-रोम रोमांचित

है, पुलकित है। आप चिरायु हों, निरामय हों। पग-पग पर विजयश्री का वरण करते हुए भैक्षवगण, जिनशासन एवं मानवता की सेवा करते रहें। वर्धापना के मंगल अवसर पर सहस्त्र-सहस्त्र मंगलकामनाएं।

विनयावनत

बेंगलुरु **साध्वी पीयूषप्रभा**

स्मृति-संबल

- जींद निवासी श्री विजयकुमार जैन (सुपुत्र-श्री लखमीचद जैन, छातरवाला) का देहान्त हो गया। वे वहां के सक्रिय कार्यकर्ता श्री ईश्वरचद जैन के लघु भ्राता थे।
- गुड़ारामसिंह निवासी चिकमगलूर (कर्नाटक) प्रवासी श्रीमती बिदामबाई गादिया (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. ओकचदजी गादिया) का संथारे में स्वर्गवास हो गया। वह श्रद्धाशील श्राविका थीं। सामायिक, जप, संतदर्शन आदि का नियमित क्रम था। उधर जाने वाले साधु-साध्वियों की सेवा बहुत मनोयोग से करती थीं। उन्होंने अपने परिवार को धर्म के अच्छे संस्कार दिए। उनके सुपुत्र जयप्रकाश, शांतिलाल, सुरेन्द्र, पुष्पराज आदि अच्छे कार्यकर्ता हैं। पूज्यप्रवर ने श्रीमती गादिया को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन से संबोधित किया है।
- दौलतगढ़ निवासी श्रीमती संतोषदेवी आंचलिया (धर्मपत्नी-श्री फतेहलाल आंचलिया) का स्वर्गवास हो गया। वे समणी हर्षप्रज्ञाजी की मातुश्री थीं। संतोषदेवी में धर्म के अच्छे संस्कार थे।
- श्रीडूंगरगढ़ निवासी श्रीमती रूपांदेवी डागा (धर्मपत्नी-स्व. श्री चुन्नीलालजी डागा) का देहावसान हो गया। अपनी जन्मशताब्दी पूर्ण कर उन्होंने १०१वें वर्ष में प्रवेश कर लिया था। युवावस्था में पति वियोग के बाद विषम परिस्थिति में मनोबल के साथ अपने बच्चों का पालन-पोषण किया। उनकी सहिष्णुता उल्लेखनीय थी। दो वर्षीतप एवं पखवाड़े सहित अनेक तपस्याएं कीं। सड़सठ वर्ष से रात्रि भोजन, जमीकन्द व सचित्त का परित्याग था। वर्षों से प्रतिदिन सात सामायिक और संवत्सरी को अष्टप्रहरी पौषध किया करती थीं। श्रीडूंगरगढ़ जैन समाज में सबसे लंबी उम्र प्राप्त श्राविका रूपांदेवी को अपनी छह पीढ़ियों को देखने और चार आचार्यों के दर्शन-सेवा का सौभाग्य मिला।
- गंगाशहर निवासी श्री केसरीचन्दजी डागा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भंवरीदेवी डागा का देहावसान हो गया। डागा दम्पति के मन में धर्म के प्रति गहरी अभिरुचि थी।
- फतेहगढ़ (कच्छ) निवासी गांधीधाम प्रवासी श्रीमती कमलाबेन संघवी (धर्मपत्नी-डॉ. बसंतभाई कानजीभाई संघवी) का देहावसान हो गया। उनके परिवार से मुनि अनंतकुमारजी, साध्वी मूलांजी, साध्वी मुक्तिश्रीजी, साध्वी मंगलयशाजी, साध्वी मल्लिकाश्रीजी, साध्वी गुरुयशाजी एवं समणी रुचिप्रज्ञाजी आदि दीक्षित हैं। कमलाबेन सेवाभावी श्राविका थीं। सामायिक, स्वाध्याय आदि का नित्यक्रम था। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं सेवा का लाभ लेती थीं।
- चारभुजा निवासी मुम्बई प्रवासी श्री भंवरलालजी चोरड़िया का देहावसान हो गया। उनकी धार्मिक व सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरुचि थी। प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय का क्रम था। प्रतिवर्ष चतुर्मास में केन्द्र की उपासना करते थे। स्वास्थ्य की अनुकूलता की स्थिति में मुम्बई क्षेत्र में प्रवासित साधु-साध्वियों के दर्शन-सेवा व प्रवचन श्रवण का लाभ लेते थे। उनके पुत्रों--संपतमल, प्रकाश आदि तथा पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं। उनकी सुपुत्री श्रीमती संतोष भीमराजजी कच्छारा भी अच्छी सेवाभावी श्राविका है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 22-12-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- मोमासर निवासी श्रीमती सूरजदेवी संचेती (धर्मपत्नी-स्व.माणिकचन्दजी संचेती) का बयासी वर्ष की उम्र में देहान्त हो गया। श्रद्धालु श्राविका सूरजदेवी के प्रतिदिन सामायिक, संतदर्शन का नियम था। वर्षों से जमीकन्द व रात्रि भोजन का परित्याग था। गंगाशहर के सुप्रसिद्ध समाजभूषण छोगमलजी चौपड़ा के अनुज रावतमलजी चौपड़ा की वह सुपुत्री थी।

संबोधन-अलंकरण

१६ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने बालोतरा निवासी **श्री धनराज ओस्तवाल** को **'श्रद्धानिष्ठ श्रावक'**, साध्वी आरोग्यश्रीजी की संसारपक्षीया मां श्राविका **रेशमीदेवी संचेती,** साध्वी वंदनाश्रीजी की संसारपक्षीया मां **श्रीमती सुमनदेवी छाजेड़** तथा रासीसर निवासिनी **श्रीमती पानीदेवी सुराणा** एवं बालोतरा निवासिनी **श्रीमती कमलादेवी ओस्तवाल** को **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. श्री मदनलालजी कोठारी (अहमदाबाद-मुम्बई) की पुण्यस्मृति में उनकी मातुश्री श्रीमती कस्तूरीदेवी, धर्मपत्नी श्रीमती केसरदेवी, सुपुत्र योगेश, पंकज, सुपौत्र जैनम, आगम, वीरम कोठारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री पुखराजजी लच्छीरामजी कोठारी (गजपुर-अहमदाबाद) की पुण्यस्मृति में रतनलाल, कुन्दनमल, नानालाल, अशोककुमार, दिलीपकुमार-रेखा, अक्षय व रिया कोठारी परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मीठालालजी कावड़िया (सुपुत्र-स्व. मोडीलाल जी कावड़िया, सायरा-सूरत) की पण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती बदामबाई, सुपुत्र व पुत्रवधू सूर्यप्रकाश-मंजुदेवी, सुपौत्र अमित, सुपौत्री भूमि कावड़िया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्वर्गीया विमलाबेन मोदी (सुपुत्री-स्व. श्री रामचन्द्रभाई एम.मोदी, रड़का-वाव) की पुण्यस्मृति में उनके भ्राता श्री अमृतभाई-मंजुलाबेन, धीरजभाई-रसीलाबेन मोदी, अहमदाबाद-सूरत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री लालचन्दजी चोपड़ा (सुपुत्र-स्व. कुन्दनमलजी चोपड़ा, बालोतरा-अहमदाबाद) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती झमकूदेवी, सुपुत्र भैरूलाल, मोहनलाल, सुपौत्र अमित, विवेक, श्रेयांस, हर्ष, प्रपौत्र अद्विक चोपड़ा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- अंकिता व पंकज धाड़ेवा के अठाई तप के उपलक्ष्य में श्री माणकचन्द, बुधमल, कनकमल धाड़ेवा, रतनगढ़ (राज.) व बालेसर (ओडिसा) द्वारा प्रदत्त।

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर बाड़मेर अंचल में परिभ्रमण कर रहे हैं। प्रवास विवरण पूर्व विज्ञप्तियों में प्रकाशित हो चुका है। दर्शन-उपासना हेतु आने वाले श्रद्धालुजन उसी के अनुसार अपना कार्यक्रम निर्धारित करें। यहां का निकटवर्ती रेलवे स्टेशन बालोतरा है। यहां से बाड़मेर अंचल के किसी भी गांव और नगर के लिए बसें और टैक्सियां हर समय उपलब्ध रहती हैं।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा,
पो. टापरा-३४४ ०२३ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**